International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(II), July- September, 2025, pp. 44-50

सामाजिक संवेगात्मक अधिगम – एक परिचर्चा

Jyoti Arora[1*] | Dr. Sapna Verma[2]

[1]Research Scholar, Department of Education, Banasthali Vidyapeeth.
[2]Research Guide, Department of Education, Banasthali Vidyapeeth.

[*]Corresponding Author: khatrijti@gmail.com

Citation: Arora, J., & Verma, S. (2025). सामाजिक संवेगात्मक अधिगम - एक परिचर्चा. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(II)), 44–50. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/7.3(ii).7920

सार

आज के इस मशीनी युग में बदलती शिक्षा व्यवस्था के आधार व प्रतिमान कहीं ना कहीं इस बात को सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि शिक्षा का डिजीटलीकरण व आनलाईन शिक्षा वास्तव में जानने की प्रक्रिया को सीखने तक ले जाने में सक्षम है भी या नहीं। वास्तव में शिक्षा का अर्थ अपरोक्ष रूप से व्यक्ति को वश में करना नही, अपितु उसे सारे समाज के लिए जवाबदेह बनाना है। तेजी से बदलते शैक्षिक आयाम कहीं ना कहीं अपने प्रमुख लक्ष्य से भटकाव का अहसास दे रहे है। आज का बालक जिस प्रकार एक प्रतियोगी समाज की अन्धी दौड़ में दौड़ाया जा रहा है वह किसी भी परिस्थिति में स्वीकार योग्य नहीं हो सकता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसके पास मुस्कराने व नम होने जैसे जन्मजात संवेग है । बाहरी रूप से तो सभी एक समान दिखायी देते है, परन्तु हर व्यक्ति की अपनी ही क्षमता व विशेषता होती है और स्वयं को समाज के समकक्ष बनाने की अपनी ही परिधि भी। ऐसी स्थिति में सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि मशीनों से पढ़ने तथा शिक्षक के प्रत्यक्ष संपर्क के अभाव में बालक का सामाजिक व संवेगात्मक विकास सक्षम है भी या नहीं। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा को अंक–प्रक्रिया से इतर समग्र विकास की अवधारणा के रूप में समझने का प्रयास है । इस संदर्भ में यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि आज के समानान्तर परिदृश्य में कौन व कैसे बालकों की संवेदनशीलता को सही दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहा है । CASEL फ्रेम वर्क क्या है ? SEL कैसे कार्य करती है।

शब्दकोश: *CASEL, समानुभूति, संवेदी कुशलता, आत्म जागरूकता, डिजीटलीकरण।*

प्रस्तावना

बेहतरीन जीवन एक बेहतरीन शिक्षा से – बेहतरीन शिक्षा एक बेहतरीन व्यवस्था से और बेहतरीन व्यवस्था एक बेहतरीन सोच से बनती है। सोचने की सक्षम क्षमता सामाजिकता के गुण को दर्शाती है परन्तु केवल सामाजिकता का गुण चिन्ता की ओर अग्रसर करता है। चिन्ता से चिन्तन की ओर ले जाने वाली योग्यता संवेगात्मकता में छिपी है। भारत के संदर्भ में वर्तमान परिदृश्य कुछ विचलित करता है, जहाँ शिक्षा का कारोबार बड़े पैमाने पर किया जा रहा है तथा समाज को इस कारोबार के माध्यम से मिल रहे है – कारोबारी। जो केवल लाभ और हानि की गणित को ही समझते है। जबकि एक विकासशील समाज को आवश्यकता होती है एक अच्छे नैतिक इन्सान की, जो अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों पर ध्यान लगाये, अपनी ज्ञानात्मक स्थिति को कौशलात्मक स्थिति तक लेकर जाये। स्तरीय जानकारी प्राप्त कर केवल एकमात्र उद्देश्य नौकरी प्राप्त कर लेना

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

आज के समाज का भयावह सत्य है। परन्तु एक सभ्य समाज के युवा केवल नौकरी प्राप्त करने तक ही सीमित रहेंगे तो ऐसी स्थिति भावी समाज के विकसित प्रारूप को तैयार करने में असक्षम रहेगी । एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत में विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी रहेगी। जनसंख्या का यह वृहद आकार तभी वरदान साबित होगा जब ये युवा कार्यबल में शामिल हो सकने के लिए पर्याप्त कुशल हों । इसमें सबसे महत्ती भूमिका होती है – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की।

आज की शिक्षा प्रणाली में सामाजिक व संवेगात्मक अधिगम धीरे–धीरे कमजोर हो रहा है जिसके कई कारण हैं जैसे डिजीटल व ऑनलाइन शिक्षा का बढ़ता प्रभाव, परीक्षा केन्द्रित शिक्षा प्रणाली, नैतिक व सामाजिक शिक्षा का अभाव, माता–पिता और समाज की बदलती भूमिका, सहपाठ्यक्रम गतिविधियों की कमी, सहानुभूति व नैतिकता में कमी, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि आदि ।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन.सी.आर.बी.) के आंकड़ों के आधार पर ष्छात्र आत्महत्यारू भारत में महामारीष् रिपोर्ट (अगस्त 2024) वार्षिक आई.सी. सम्मेलन और एक्सपो 2024 में लॉन्च की गयी। रिपोर्ट में बताया गया कि जहाँ कुल आत्महत्या की संख्या में सालाना 2 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है, वहीं विद्यार्थी आत्महत्या के मामलों में 4 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है।

नालन्दा – तक्षशिला जैसे वैश्विक शिक्षण संस्थानों की धरोहर रखने वाली भारतीय भूमि जो गुरू–शिष्य परम्परा की द्योतक रही है जहाँ शिक्षा का इतिहास ही सभ्यता का इतिहास रहा है । शिक्षा प्राप्ति का स्थान गुरू आश्रम होता था। जहाँ सभी वर्गो के विद्यार्थी एक साथ, एक समान शिक्षा प्राप्त करते थे चाहे वे राजपुत्र कृष्ण हो या सामान्य जन सुदामा हो । शिक्षा केवल पठन–पाठन की प्रक्रिया नहीं होती थी अपितु जीवन जीने की क्रिया होती थी । विद्यार्थी प्रातःकाल उठकर अपने सभी कार्य कर गुरूकुल के भी सभी कार्य स्वयं मिलजुलकर करते थे। इस सम्पूर्ण शिक्षा अर्जन प्रक्रिया से स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों में सामाजिकता, समानुभूति, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, निर्णय–निर्माण क्षमता का विकास हो जाता था । समय आगे बढ़ा, शासन बदला, परिस्थितियां बदली, शासन की आवश्यकतायें बदली और शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित कर दी गयी । प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसमें भारतीय गुलामी के 190 वर्ष उत्तरदायी रहे । गुलामी की जंजीरे तो 1947 में हट गयी परन्तु शिक्षा की जड़ता व्यवहारिकता से तब तक बहुत दूर आ चुकी थी । सरकारी स्तर पर समय–समय पर कई शिक्षा नीतियां लायी गयी परन्तु आज के इस तेजी से बदलते दौर में, डिजीटलीकरण के युग में, शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षार्थी–शिक्षक के समक्ष कई बड़ी चुनौतियां खड़ी हो चुकी है । ऑनलाईन कक्षाओं के बढ़ते प्रचलन ने सहपाठियों व शिक्षकों के मध्य संवाद समाप्त कर दिये है। अकेले अध्ययन करने का प्रचलन बढ़ रहा है जिससे सहयोगी अधिगम की संभावनायें कम हो रही हैं। भावात्मक जुड़ाव से दूर हो रहे है। चूंकि वर्चुअल माध्यमों में मानवीय स्पर्श व सहानुभूति की कमी होती है इसी कारण बालक का संवेदनात्मक अधिगम प्रभावित हो रहा है। सोशल मीडिया और डिजीटल मनोरंजन ने विद्यार्थियों की संवेदनशीलता और सहानुभूति को प्रभावित किया है। शिक्षा प्रणाली में तनाव, अवसाद और चिंता जैसी समस्यायें बढ़ रही है। संवेदनात्मक अधिगम का अभाव समाज में असंवेदनशीलता, सामाजिक अपराध और असमानताओं को बढ़ावा दे रहा है।

सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम का प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दिन–प्रतिदिन कमजोर हो रहा है और इसे पुर्नजीवित करने के क्रम में शैक्षणिक, सामाजिक और भावात्मक अधिगम (CASEL) ढांचे को अपनाने के प्रयास किये जाने चाहिए। CASEL – संवेगात्मक बुद्धि के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले डेनियल गोलमैन व उनके साथियों का एक प्रयास है। जिसके माध्यम से इन्होनें शिक्षण विधि–प्रविधियों व विद्यालयी वातावरण में कुछ सामान्य परिवर्तन कर शिक्षा को सकारात्मकता के धरातल पर ला कर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का आधार बनाने पर बल दिया है जिससे शिक्षा विद्यार्थी को सामाजिक स्तर पर आत्म जागरूक, संवेगात्मक रूप से मजबूत बनाने में कारगर सिद्ध हो सके। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम (SEL) कहा जाता है। सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम की अवधारणा इतनी पुरानी है जितने शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य सम्बन्ध, वैसे तो SEL से सम्बन्धित सिद्धान्त हर दौर में रहे है परन्तु औपचारिक रूप से इसे शिक्षा के क्षेत्र में लाने का प्रथम

प्रयास 1968 में येल विश्वविद्यालय के चाइल्ड स्टडी सेंटर में कार्यरत डॉ. जेम्स कामर और उनके सहयोगियों द्वारा किया गया। उनके द्वारा दो स्कूलों में कुछ परिवर्तन कर विचारों को व्यवहार में लाने का एक कार्यक्रम शुरू किया। परिणामस्वरूप 1980 के दशक की शुरूआत में दोनो विद्यालयों में व्यवहार सम्बन्धी चुनौतियों में गिरावट देखी गयी और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार आया।

धीरे–धीरे यह कार्यक्रम आगे बढ़ने लगा, टिमोधी श्राइवर और डॉ. रोजर पी. वीसबर्ग के नेतृत्व में शिक्षकों और शोधकर्ताओं के एक समूह ने न्यू हेवन सोशल डेवलमेंट प्रोग्राम शुरू किया। लगभग इसी समय डॉ. वेसबर्ग ने डॉ. मौरिस एलियास के साथ मिलकर सामाजिक और भावात्मक कौशल को बढ़ाने के लिए एक रूपरेखा तैयार की। 1994 में एक बेहद सक्रिय लोगों का समूह आया जिसने शिक्षा व गुणवत्तापूर्ण के मध्य टुटे हुये सिरे को जोड़ने के लिये एक पृष्ठभूमि तैयार की। इन सभी का मानना था कि विद्यालयों को सभी बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिये। इसी क्रम मे हम सबसे पहले सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम की अवधारणा को समझने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम (SEL)

सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम एक ऐसी पद्धति है जो सभी उम्र के अधिगमकर्ताओं को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने, उन्हें पूरी तरह से महसूस करने और दूसरों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने में मदद करती है। इस माध्यम से सीखने के पश्चात वह सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाने में सक्षम बनता है। निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु वह स्वयं की व्यूह–रचना बनाने में भी सक्षम होता है। हंफ्रे एट अल (2011) के अनुसार – षविस्तृत रूप में सामाजिक–संवेगात्मक सिद्धान्त वह प्रक्रिया है जो विद्यार्थी को प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक, भावात्मक और अन्य सभी सम्बन्धित कौशल व्यवहार व मूल्यों को सीखने में सहायता प्रदान करती है। इसमें ऐसे विचार, भावनायें और कार्य शामिल है जो उन्हें विद्यालय में सफल होने में सक्षम बनाती है। " CASEL के अनुसार सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से 5 प्रमुख योग्यताओं का विकास होता है जो कि कक्षा–कक्ष, घर तथा अधिगमकर्ता के स्वयं के समूह में सभी जगह उसके सहायक हो सकते है। ये पांच मुख्य योग्यतायें हैं –

- **आत्म–जागरूकता**

इसके अन्तर्गत अपनी भावनाओं को पहचानने तथा ये स्वयं के व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करेगी, इसके प्रति संवेदनशील बनाती है। इसी के साथ स्वयं की ताकत व कमजोरियों को समझने की क्षमता भी प्रदान करती है।

- **स्व प्रबंधन**

इसके अन्तर्गत विभिन्न परिस्थितियों में अपने विचारों, भावों व कार्यो पर नियंत्रण रखने की क्षमता का विकास होता है जिससे लक्ष्य–केन्द्रित क्रियाविधि तैयार की जा सके।

- **सामाजिक जागरूकता**

इस योग्यता का सम्बन्ध समानुभूति से है जिसके माध्यम से स्वयं को अन्य व्यक्ति के स्थान पर रखकर उनकी भावनाओं, संघर्षो व परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील बनने की क्षमता का विकास होता है।

- **संवेदी कुशलता**

यह योग्यता दूसरों की बात सुनने, उनके साथ संवाद करने, संघर्ष को शान्तिपूर्वक हल करने और यह जानने पर केन्द्रित है कि हम किस व्यक्ति से कब सहायता की उम्मीद या प्रयास कर सकते है।

- **निर्णय– निर्माण योग्यता**

नैतिकता, सुरक्षा, सम्भावित परिणामों को भांप कर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिये तथा किस प्रकार से कार्य करने चाहिये । इसी संदर्भ में निर्णय लेने की योग्यता का विकास होता है । यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि लिये गये निर्णय दूसरों के लिये तो हितकारी हो ही परन्तु स्वयं के लिये भी सही होने चाहिये ।

कक्षा–कक्ष में सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम का समावेश

कक्षा–कक्ष में सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम का वातावरण तैयार करने हेतु शिक्षण प्रक्रिया में नीचे दी गई कुछ सामान्य क्रियाओं को शामिल किया जाना चाहिए –

- सर्वप्रथम प्रत्येक दिन की शुरूआत एक छोटी सी गतिविधि से करें जहाँ विद्यार्थी अपनी भावनाओं को साझा कर सके। कुछ श्रव्य–दृश्य सामग्रियों का प्रयोग करके भी उनके भावों को समझने का प्रयास किया जा सकता है।
- कक्षा का वातावरण सकारात्मक बनाया जाये, उनके द्वारा किये गये सही व्यवहार या बात की प्रशंसा की जाये, बोलने के लिये प्रेरित किया जाये।
- सामाजिक परिस्थितियों को समझने के लिये अनुकरणीय पद्धति का प्रयोग किया जाना चाहिये। छोटे–छोटे प्रेरणादायक चरित्रों का अनुकरण करने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये।
- विभिन्न चरित्रों व घटनाओं पर विस्तृत विचार–विमर्श का अवसर प्रदान करना चाहिये। विद्यार्थी सक्रिय रूप से तत्पर रहकर आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सके इसके लिये स्वस्थ वातावरण उपलब्ध करवाना चाहिये।
- समूह परिचर्चा के साथ सामूहिक क्रियाओं में सहयोग के साथ काम करने के लिये प्रेरित करना चाहिये। इस के लिये छोटे–छोटे प्रोजेक्ट देने चाहिये। कुछ वैज्ञानिक प्रयोग भी किये जा सकते है, जिन्हें समूह में रहकर किया जाये।
- कक्षा–कक्ष में प्रत्येक क्रिया के दौरान अर्थपूर्ण शब्दों, भावों व भाषा की गरिमा पर विशेष ध्यान देना चाहिये।
- विषय–विशेष के विविध प्रकरणों को सामाजिकता व संवेगात्मकता से जोड़ने का प्रयास करना चाहिये।

- विभिन्न मुद्दों पर चिन्तन करने के अवसर प्रदान करने चाहिये । सामाजिक चिंता को संवेगात्मक चिंतन से किस प्रकार हल किया जा सकता है इस ओर विशेष प्रयास करने चाहिये । चरित्र की सुदृढता पर बल देना चाहिये।

उपरोक्त किये गये प्रयास तभी अपेक्षित परिणाम प्राप्त कर सकेंगे जब शिक्षक स्वयं एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें तथा सकारात्मक सामाजिक–भावात्मक कौशल का प्रदर्शन करें । प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति सजग रहे तथा उसकी अनुठी आवश्यकताओं और सीखने की शैली के अनुसार अपना दृष्टिकोण बनायें। सहकर्मियों और अभिभावकों के साथ सहयोग करे।

सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम के लाभ

SEL बच्चों व व्यस्कों दोनो के लिये लाभकारी पद्धति है, यह आत्म जागरूकता, शैक्षिक उपलब्धि तथा कक्षा के बाहर व भीतर दोनो तरफ ही सकारात्मक व्यवहार को बढ़ाती है। कुछ प्रमुख शोधों में SEL कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की ग्रेड व नियमितता में काफी सुधार पाया गया। SEL पद्धति के माध्यम से सीखे गये कौशल से अधिगमकर्ता में भावात्मक तनाव से निपटने की क्षमता, समस्याओं के बेहतर समाधान करने की क्षमता तथा साथियों द्वारा गलत प्रवृतियों की ओर ले जाने पर मजबूती से विरोध करने की क्षमता का विकास तुलनात्मक रूप से प्रभावी होता है। जब विद्यार्थी समस्याओं के समाधान करने हेतु व्यक्तिगत स्तर पर तैयार हो जाता है, वह भावी जीवन में भी आने वाले दबावों का सामना मजबूती से कर पाता है। शिक्षा, रोजगार व पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का SEL पद्धति द्वारा प्रभावी तरीके से समाधान खोजा जा सकता है।

अमेरिकन जर्नल ऑफ पब्लिक हैल्थ द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में बताया गया कि जब शिक्षक यह समझने में सक्षम होते है कि किन विद्यार्थियों को SEL सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है वे कम उम्र में ही इन विद्यार्थियों में आत्म नियंत्रण, सहानुभूति और अन्य सकारात्मक गुण विकसित करने में सक्षम हो जाते है। ऐसे विद्यार्थी आगे जाकर अपने कार्यक्षेत्र में भी बेहतर प्रदर्शन करते है।

मापन के आधार

जहाँ तक सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम के मापन की बात की जाती है तो यह केवल परिणामात्मक आंकलन या ग्रेड्स पर ही आधारित नहीं होता है अपितु इससे कहीं अधिक की अपेक्षा की जाती है । डा. क्रिस्टीना सिप्रियानो बताती है कि 'जब विद्यार्थी संघर्ष कर रहे होते हैं और उनका विद्यालय का प्रदर्शन अपेक्षित नहीं होता है तो इसका सीधा सम्बन्ध विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, प्रेरणा, विद्यालय से जुड़ाव की कमी के रूप में देखा जाता है । इसी के साथ शिक्षा की प्रक्रिया आत्मसन्तोष के स्थान पर चिंता देने के लिये उत्तरदायी अधिक देखी जाती है।' ऐसी स्थिति में जब विद्यार्थियों को SEL द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर सीखने–सिखाने की ओर ले जाया जाता है तो उनके अपने कार्यो के प्रति अधिक जिम्मेदार होने की सम्भावना रहती है और परिणामस्वरूप वे संस्थान व सहपाठियों के साथ भी अधिक जुड़ाव महसूस कर सकेंगे। इसी के साथ वे अपनी शिक्षा पर अधिक एकाग्र हो सकेंगे। जो विद्यार्थी सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से सीखता है, उसमें तनाव व दुश्चिंता में रहने की सम्भावना कम हो जाती है।

महत्व

जब भी हम अपने जहन मे एक अच्छे शिक्षक की छवि देखने का प्रयास करते है तो वह केवल उसके ज्ञान पर आधारित नहीं होती अपितु उसके व्यवहार पर भी आधारित होती है। सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम प्रक्रिया मन व मस्तिष्क दोनो को समानान्तर रखकर की जाने वाली प्रक्रिया है। यदि हम अपने आस–पास कुछ देशों की शिक्षा व्यवस्था को देखें तो जापान, स्वीडन, नार्वे, फिनलैण्ड जैसे विकसित देशों की शिक्षा व्यवस्था बेहतर मानी जाती है। जिसमें हाल ही के कुछ वर्षो में फिनलैण्ड में चलने वाली शिक्षा व्यवस्था तथा उसके परिणामों ने बड़े–बडे देशों को अपनी शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित सुधारों की मांगों को बल मिला। फिनलैण्ड में दी जाने वाली शिक्षा प्रारम्भ होती है–एक प्रश्न से कि आप क्यों पढ़ रहे हो तथा जो पढ़ाया जा रहा है उसका

औचित्य क्या है ? देखा जाये तो ये प्रश्न बेहद महत्वपूर्ण है और इनके उत्तर इतने सटीक होने चाहिये जिससे प्रत्येक अधिगमकर्ता स्वयं आत्मविश्वास व रूचि के साथ सीखने के लिये प्रेरित हो। फिनलैण्ड में इसका उत्तर दिया जाता है कि शिक्षा का उद्देश्य एक अच्छा इंसान बनाना, उसके जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाना तथा वे व्यक्तिगत रूप से देश के लिये भी महत्वपूर्ण बने। इसी क्रम में वहां की सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया सामाजिक व भावात्मक रूप से विद्यार्थियों को मजबूत बनाने पर केन्द्रित है। वहां प्रारम्भिक शिक्षा 7 वर्ष से शुरू होती है तथा 6 वर्ष तक एक ही शिक्षक द्वारा उसे व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। इस प्रक्रिया में हर विद्यार्थी का अपने शिक्षक से विशेष लगाव हो जाता है साथ ही शिक्षक भी प्रत्येक विद्यार्थी की अच्छाईयां व कमियों को बेहतर ढंग से समझता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की परीक्षा का दबाव ना तो विद्यार्थी पर होता है और ना ही शिक्षक पर। सोलह वर्ष की आयु में सभी को एक समान परीक्षा देनी होती है जिसमें भी गुणात्मक आंकलन ही किया जाता है। इस स्तर पर विद्यार्थी स्वयं निर्धारित करता है कि उसे उच्च शिक्षा लेनी है अथवा पोलोटैक्निकल कोर्स करने है। वहां कि सम्पूर्ण प्रक्रिया इस बात पर आधारित है कि मनुष्य एक सामाजिक व संवेदनशील प्राणी है और शिक्षा के माध्यम से इन तत्वों को विकसित किया जाना चाहिये। इसी के साथ वहां शिक्षक बनने की प्रक्रिया भी बेहद जटिल है, वहां वही व्यक्ति शिक्षक बनने के योग्य माना जाता है जो स्वयं मनोवैज्ञानिक आधार पर मजबूत होता है। वहां बच्चों को होमवर्क, बैग, यूनिफार्म आदि से सम्बन्धित किसी भी प्रकार का दबाव नहीं दिया जाता है।

इन सभी प्रयोगों का परिणाम बेहद सफल हो रहा है जिसका सबसे बडा उदाहरण एक परीक्षा परिणाम के रूप में देखा गया – PISA (Programme for International Student Assessment) एक ऐसी संस्था है जो वैश्विक स्तर पर प्रत्येक तीन वर्ष में एक परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों का आंकलन करती है। इस संस्था द्वारा वर्ष 2022 में ली गयी परीक्षा के अन्तर्गत विज्ञान संकाय में फिनलैण्ड के विद्यार्थियों ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। ये परिणाम इसीलिये बेहद चौकाने वाले रहे क्योंकि फिनलैण्ड के विद्यार्थियों को इस प्रकार की परीक्षा देने की आदत ही नहीं होती है। अतः कहीं ना कहीं यह तो स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य अंकों की दौड़ में दौड़ाना तो कतई नहीं होना चाहिये। हर बालक जन्म से कुछ गुणों के साथ दुनिया में आता है शिक्षा का उद्देश्य उन गुणों को विकसित व संवर्धित करने का एक मंच तैयार करना होना चाहिये। इसी कारण आज के इस तेजी से बदलते दौर में सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम (SEL) की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

समीक्षा

UDISE द्वारा जारी जानकारी के अनुसार भारत में 2024 में स्कूल नामांकन में 37 लाख की गिरावट आयी है। ये आंकडे कहीं ना कहीं ये सोचने को मजबूर करते है कि आजादी के 78 वर्षो के बाद भी हमारी साक्षरता दर National Statistical Office (NSO) 2021 की रिपोर्ट के आधार पर 77.70 प्रतिशत ही है, जबकि बहुत से देश जैसे फिनलैण्ड, लक्जमबर्ग, नार्वे जैसे देश 100 प्रतिशत साक्षरता दर तक पहुँच चुके हैं। यहां बात संसाधनों व जनसंख्या से ज्यादा व्यवस्था व प्रक्रिया की है। समय–समय पर भारत में कई शिक्षा नीतियां आयी और सभी में लगभग एक बात सामान्य थी कि शिक्षा पर जीडीपी का कुल 6 प्रतिशत खर्च किया जाना चाहिये। परन्तु अभी तक हमारे बजट में इतनी राशि कभी शिक्षा के लिये आरक्षित ही नहीं की गई। आज जब तकनीक व कृत्रिम बुद्धिमता अपने पैर तेजी से पसार रही है, वहां सामाजिकता व संवेगात्मकता को शिक्षा से जोड़े रखना अत्यन्त आवश्यक है। जहाँ इस नयी सदी में कई मनोवैज्ञानिक विधियां जैसे POMODORO Technique, BoÛ Strategy आदि आ चुकी है। वहाँ बस आवश्यकता है इसकी पहुँच बढ़ाने की। साथ ही आवश्यकता है आधुनिक तकनीकों के साथ परम्परागत तकनीकों के सम्मिश्रण की। आज भी हम अपनी हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों की कई कहानियों जैसे – ईदगाह, पूस की रात, नमक का दारोगा को याद करते है। इन कहानियों ने हमें कहीं ना कहीं जीवन के वास्तविक संघर्ष, स्वयं के क्षणिक उपभोग से ऊपर अपनों की जरूरत तथा कर्तव्य पथ पर चलने के लिये अपनों से ही मतभेद पर सही निर्णय लेने की क्षमता को सिखाया है। कवितायें, कहानियां, बाल दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गणतंत्र दिवस जिस तरह हमारे सीखने के काल में गुथे हुये थे, प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हमें

मानसिक रूप से मजबूत व नैतिक कर रहे थे। वो दौर विद्यार्थियों के मानसिक अवसाद या आत्महत्या का तो कदापि नहीं था, ना ही बालमन बाजारवाद के चंगुल में था। आज छोटे–छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल और उनके अन्दर खेले जाने वाले विडियो गेम उसे एक बन्द कमरे में अकेला छोड़ देते है। ये प्रक्रिया ना बालक में सामाजिकता ला पाती है ना ही वास्तविकता से रूबरू करवा पाती है। जिसका परिणाम हम अपने आस–पास आसानी से देख रहे हैं। इसीलिये आज शैक्षिक, सामाजिक व संवेगात्मक अधिगम को आपस में जोड़कर शिक्षा प्रक्रिया को संचालित किया जाना आवश्यक है। इस क्षेत्र में किये गये शोध भी ये बताते है कि इस प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त परिणाम बेहद सकारात्मक रहे है। यद्यपि अभी इसका प्रयोग बेहद सीमित संस्थाओं द्वारा सीमित रूप से ही किया जा रहा है जिसे और विस्तारित किया जाना चाहिये तथा इसे पाठ्यचर्या के साथ समावेशित किया जाना चाहिये। भारत में हाल ही में प्रस्तुत की गयी नई शिक्षा नीति–2020 भी सामाजिक–संवेगात्मक अधिगम के महत्व को स्वीकारते हुये विद्यालयों को इससे जुड़ी तकनीकों को अपनाने पर बल देती है। नई शिक्षा नीति तथा CASEL - FRAMEWORK वास्तव में विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल देते है तथा इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते है कि विद्यालयों का लक्ष्य न केवल शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देना है अपितु उनमें भावात्मक सुदृढ़ता व सामाजिक कौशल को भी बढ़ावा देना है।

References

1. CASEL- (2020)- What is SEL\ Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning- https://casel-org/what-is-sel/
2. Durlak, J. A., Weissberg, R. P., Dymnicki, A. B., Taylor, R.D. & Schellinger, K.B. (2011) - The impact of enhancing students* social and emotional learning: A meta-analysis of school-based universal interventions- Child Development, 82(1), 405–432- https://doi-org/10-1111/j-1467-8624-2010-01564-Û
3. Finnish National Agency for Education- (2020)- Education in Finland.
4. https://youtu-be/5KambZa&HÛs\si=CWhwEFXiB_MCARNs
5. Kumar, A. (2024) - education desk, Amar Ujala.
6. Mahoney, J. L., Durlak, J. A. & Weissberg, R.P. (2018) - An update on social and emotional learning outcome research - Child Development, 88(4), 1156–1174- https://doi-org/10-1111/cdev-12864
7. National University- (n.d.) What is social emotional learning (SEL): Why it matters- National University-https://www-nu-edu/blog/social-emotional-learning-sel-why-it-matters-for-educators/
8. Noidabusinessguide-com/litracy-rate-in-india-2024.
9. Payton, J., Weissberg, R.P., Durlak, J. A., Dymnicki, A. B., Taylor, R. D., Schellinger, K. B., & Pachan, M. (2008) - The positive impact of social and emotional learning for kindergarten to eighth-grade students: Findings from three scientific reviews- Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning.
10. Sahlberg, P. (2015) - Finnish lessons 2.0: What can the world learn from educational change in Finland\ Teachers College Press.
11. The Times of India-PTI/updated: jan.2,2025.
12. Zins, J. E., Weissberg, R. P., Wang, M. C., & Walberg, H. J. (Eds) (2004) Building academic success on social and emotional learning: What does the research say\ Teachers College Press.

❑❑❑